पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका
Wisdom with valour brings glory to the nation

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान
11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001

उर्दू अखबारों की सुर्खियाँ

दिनांक : 12 जुलाई 2010

(उर्दू में प्रकाशित होनेवाले राष्ट्रीय समाचारपत्रों की विस्तृत खबरें एवं आलेख हिन्दी में पढ़ने के लिए कृपया डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान की वेबसाइट www.indiannationalism.org पर लॉग ऑन करें।)

सियासत (रोजनामा)

हैदराबाद

11 जुलाई 2010

www.siasat.com/

राम मंदिर मुद्दे को हवा देने के लिए आरएसएस का फैसला

नईं दिल्ली।राष्ट्रीय स्तर पर देश मे आरएसएस की ओर से एक बार फिर राम मंदिर मुद्दे को हवा देने का फैसला किया गया ताकि एक बार फिर हिन्दूत्व चर्चा का विषय बन सके। आरएसएस के खिलाफ की गई कार्यवाही और देश मे हुए बम धमाकों में हिन्दू दहशतगर्दी की भूमिका की वजह से संगठन को कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ रहा है। मौजूदा हालात को देखते हुए आरएसएस ने एक बार खुद को मनवाने और इस मुश्किल वक्त से आगे बढ़ने का फैसला किया है। इस सिलसिले मे उसने भारतीय जनता पार्टी से मदद मांगी है। आरएसएस के नेताओं ने इशारा दिया है कि आने वाले दिनों में मंदिर मुद्दा उसकी जानिब से पहली प्राथमिकता होगी इस सिलसिले में देशव्यापी जनजागरण अभियान शुरु किया जाएगा। यह अभियान 16 अगस्त से शुरु किया जाएगा।

संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों का मानना है कि राम जन्मभूमि से जुड़े आंदोलन की जानकारी आज की युवा पीढ़ी को नहीं है। मंदिर आंदोलन के लिए 18 वर्ष पहले जो भी हुआ, उसे देश की जनता के सामने तोड़मरोड़ कर पेश किया गया। ऐसे में आज की युवा पीढ़ी वस्तुस्थिति से परिचित नहीं है। जनजागरण से युवा पीढ़ी को हिंदुओं के खिलाफ किए गए दुष्प्रचार का पता लग सकेगा, जिससे यह पीढ़ी संघ से जुड़ सकेगी।

राष्ट्रीय सहारा (रोजनामा)

दिल्ली, 9 जुलाई 2010

http://urdusahara.net/roznama/roznama.aspx?btype=2

दहशतगर्दी के मामलों की जाँच से आर.एस.एस. की नींद हराम

नई दिल्ली (एसएनबी)। दहशतगर्दी मुखालिफ अभियान में रोजनामा राष्ट्रीय सहारा ने जिन तथ्यों की ओर इशारा किया था, खुफिया एजेंसियों को उसी दिशा में कामयाबी मिलती नजर आ रही है। खुफिया एजेंसियों की जांच से आर.एस.एस और उसकी शपथधारी जमाअतों की नींद उड़ गई है।

राष्ट्रीय सहारा ने पहले दिन से यह कहना शुरू कर दिया था कि दहशतगर्दी के मामलों में हिन्दू उग्रवादियों की भूमिका की जाँच होनी चाहिए।

अतः खुफिया एजेंसियों को अपनी जांच के रुख को मोड़ना पड़ा और उनकी जाँच से स्पष्ट हो गया कि देश में हिन्दू दहशतगर्दी ने पैर जमा लिए हैं।

दहशतगर्दी के मामले की ताज़ा जाँच से आर.एस.एस. गहरी चिन्ता में मुबतला हो गई है। 'द हिन्दू' अखबार के अनुसार बीजेपी एवं आरएसएस के प्रमुख रहनुमाओं ने एक अहम बैठक की। यह बैठक बीजेपी अध्यक्ष नितिन गडकरी के आवास पर हुई, जबकि दूसरी बैठक झण्डेवालान में आर.एस.एस. कार्यालय में हुई। इन दोनों बैठकों में हिन्दू दहशतगर्दी का मुद्दा रहा। इस मसले से निपटने के लिए बैठक में कूटनीति तैयार करने पर मनन चिन्तन किया गया।

द हिन्दू अखबार के अनुसार आरएसएस के वरिष्ठ नेता का मानना है कि दहशतगर्दी के मामले में आरएसएस का नाम आने से संगठन को बड़ा झटका लगा है। इस वरिष्ठ नेता के अनुसार महात्मा गांधी के कत्ल के बाद दहशतगर्गी का आरोप आरएसएस के लिए दूसरा सबसे बड़ा बदनुमा दाग है।

इंक्लाब (रोजनामा)

मुम्बई, 8 जुलाई 2010

www.inquilab.com

मुसलमानों में सियासी जमीन से जुड़े नेताओं का अभाव

अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री सलमान खुर्शीद ने कहा है कि देश के अधिकतर मुस्लिम नेता आधारहीन हैं और उनमें से कई को राजनीतिक दलों ने उनकी मुस्लिम वोटों को आकर्षित करने की क्षमता के कारण चुना है। खुर्शीद ने साप्ताहिक समाचार पत्रिका तहलका से साक्षात्कार में यह बात कही. उन्होंने कहा, 'ऐसे जमीनी राजनीतिक मुस्लिम नेताओं का वास्तव में अभाव है जिनकी जड़ें समुदाय में हों और जो जमीनी तौर पर जुड़े हों। आज के अधिकतर मुस्लिम नेता कमोबेश आधारहीन हैं और अपने समुदाय से उनका जमीनी संपर्क नहीं है।

मौलाना आजाद और रफी अहमद किदवई जैसे नेताओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वे न तो आक्रामक बागी थे और ना ही चापलूस। खुर्शीद ने कहा, 'आज ऐसा लगता है कि राजनीतिक क्षेत्र में इस प्रकार की मुस्लिम आवाजों की कमी है, जो आक्रामक और मौजूदा राजनीतिक दलों पर निर्भर हुए बिना मुस्लिम मुद्दे प्रभावी ढंग से उठा सके। उन्होंने यह बात देश के मुस्लिमों के नेतृत्व संकट से गुजरने के बारे में पूछे गये एक सवाल के जवाब में कही।

उन्होंने सच्चर समिति और रंगनाथ आयोग की रिपोर्टों का विरोध करने वालों को भी आड़े हाथों लिया जिनमें मुस्लिमों के पिछड़ेपन को उजागर किया और उपचारात्मक कदम उठाने की सिफारिशें की गयी हैं। खुर्शीद ने कहा, 'मुस्लिम सशक्तीकरण विशेषकर सच्चर समिति और रंगनाथ मिश्रा आयोग की रिपोर्ट के आधार पर किये जाने वाले किसी भी उपाय का गैर मुस्लिम ताकतें खासतौर पर कुछ स्वयंभू धर्मनिरपेक्ष तत्व और तथाकथित उदार मीडिया उग्र विरोध कर रहा है। इससे स्पष्ट तौर पर पता चलता है कि यह मुस्लिम राजनीतिक वर्ग का नहीं बल्कि कुछ हिन्दुत्ववादी तत्वों का यह एक एजेंडा है कि मुस्लिम पिछड़े बने रहें।

दावत (त्रैमासिक)

दिल्ली, 7 जुलाई 2010

http://dawatonline.com/

वतन से मुहब्बत के दावों की हकीकत

आर.एस.एस. का दावा है कि वह अपने स्वयंसेवक की प्रशिक्षण करके उन्हें जिन्दगी के विभिन्न मैदानों में भेजती है ताकि वहां उच्चतर भूमिका और वतन से मुहब्बत का आदर्श पेश कर सकें। किरदारसाजी, जेहनसाजी आर.एस.एस. के बुनियादी काम है, जिन्हें वह अपने स्थापना से लेकर आज तक अंजाम दे रही है। लेकिन उसे क्या कहा जाए आज तक आर.एस.एस. देश के सामने कोई ऐसा व्यक्ति पेश नहीं कर सकी है जो उच्चतर भूमिका या बुलंद अखलाक का आदर्श हो।

आर.एस.एस. के दामन पर देश में बदअमनी, कत्ल–व–गारतगिरी फैलाने के इतने दाग हैं कि उन्हें गिनना भी मुश्किल है। यह आर.एस.एस. का पुराना काम है। जब भी उसके कार्यकर्त्ता मुल्क दुश्मन गैर कानूनी गतिविधियों में पकड़े जाते हैं तो उनसे बहुत जल्दी खुद को अलादिया करने का ढोंग रचाती है। बाद में आर.एस.एस. के लोग उनको कानूनी मदद भी फराहम करते हैं। यह कहने और करने का ऐसा जबर्दस्त अन्तर है जिसका दूसरा उदाहरण पेश नहीं किया जा सकता।

दावत (त्रैमासिक)

दिल्ली, 7 जुलाई 2010

हिन्द पाक रिश्ते

http://dawatonline.com/

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के हवाले से बात कही जाए तो इससे साफ जाहिर होता है कि पाकिस्तान की स्थापना से लेकर अबतक इन रिश्तों को खराब करने में पाकिस्तान के फौजी हुक्मरानों का गहरा हाथ रहा। कई बार जंगे हुईं रिश्ते खराब हुए, बातचीत हुई फिर समझौते हुए फिर बात बनती हुई नजर आई लेकिन यह सिलसिला बहुत देर तक नहीं चल पाता। कुछ दिनों तक सब कुछ ठिक रहता है उसके बाद अचानक सब कुछ बिगड़ जाता है। देश की आजादी के बाद कमोबेश 1975 तक मुसलसल कांग्रेस हुकूमत करती रही। 19 महीने के आपातकाल के बाद जब चुनाव हुआ तो कांग्रेस हार गई और जनता पार्टी सत्ता में आई जिसके प्रधानमंत्री मोराजी देसाई थे और विदेशमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे। उस जमाने में पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध बेहतर बनाने का जो अमल सामने आया था वह मिसाली नजर आता है।

हालांकि उस वक्त पाकिस्तान फौजी हकूमत थी। जनरल जयाउल अध्यक्ष थे और जयाउलहक से कुछ ही पहले पाकिस्तान के अध्यक्ष याह्या खान के जमाने में हिन्द–पाक के बीच जंग हो चुकी थी। मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री बनते ही अटलजी को पाकिस्तान भेजा था। हिन्द–पाक रिश्ते बेहतर बनाने की कोशिश की थी। उन्हीं दिनों जब मोरारजी देसाई को यह बात मालूम हुई कि पाकिस्तान अमेरिका से हथियार खरीद रहा है तो मोरारजी देसाई ने जनरल जियाउल हक से पूछा था आपका दुश्मन कौन है, किसके लिए आप हथियार खरीद रहे हैं । हमें बताइये हम आपके दुश्मन को खत्म कर देंगे क्योंकि आप हमारे पड़ोसी हैं। हमारे दोस्त हैं, जो आपका दुश्मन है। हमारा दुश्मन है। शायद इस तरह का बयान हिन्दूस्तान के किसी सरबराहे मलकत ने पाकिस्तान के लिए नहीं दिया। लेकिन इसके बाद कांग्रेस सत्ता में आई और रिश्तों मे बिखराव पैदा हुवा लेकिन अब धीरे धीरे कुछ फिज़ा साजगार होती जारही है और बातचीत का सिलसिला शुरु हो गया है। लेकिन इन तमाम बातों की पृष्ठ भूमी में इस बात को जेहन में रखना चाहिए जबतक कश्मीर के मसले का कोई हल नहीं निकलता, उस वक्त तक पाक और हिन्द के बीच दोस्ती नहीं हो सकती जो दो पड़ोसीयों के बीच होती हैं। व्यापारिक रिश्ते कायम करना दरअसल हितों से ताअल्लुक रखता है। लेकिन असल रिश्ते वही हैं जो पड़ोसियों से होते हैं।